दृष्टि
The vision

Test Series–2008

Dated : 6th Sept., 2008

हिन्दी साहित्य

प्रश्नपत्र-II

Time Allowed : Three Hours | **Maximum Marks : 300**

(i) प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिएँ जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख उत्तर-पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। प्रवेश-पत्र पर उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।

(ii) प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं। बाकी प्रश्नों में से प्रत्येक खण्ड से कम से कम 'एक' प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(iii) सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड ''क''

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं तीन की व्याख्या करें। यथासंभव सौंदर्य-स्थलों का अनावरण भी कीजिए- 20x3=60

(क) ''सतगुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपगार।
लोचन अनंत उघारिया, अनंत दिखावनहार॥
गूँगा हूवा बावला, बहरा हूवा कान।
पाऊँ तै पंगुल भया, सतगुरु मारा बान॥''

(ख) ''मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँई परैं स्यामु हरित-दुति होइ॥''
''तो पर वारौं उरबसी, सुनि, राधिके सुजान।
तू मोहन कैं उर बसी ह्वै उरबसी-समान॥''

(ग) ''कर रही लीलामय आनंद–महाचिति सजग हुई-सी व्यक्त,
विश्व का उन्मीलन अभिराम–इसी में सब होते अनुरक्त।
काम-मंगल से मंडित श्रेय, सर्ग इच्छा का है परिणाम,
तिरस्कृत कर उसको तुम भूल बनाते हो असफल भवधाम।''

(घ) ''कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास,
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास,
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त,
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।''

2. 'सूर ने जिस क्षेत्र को चुना है, उसके वे सम्राट हैं'– इस कथन के आधार पर भ्रमरगीत में व्यक्त प्रेम भावना का मूल्यांकन करें। 60

3. ''राम की शक्ति पूजा' 'राम' की नहीं, 'निराला' की शक्ति पूजा है''–क्या आप इस कथन से सहमत हैं? चर्चा करें। 60

4. 'असाध्यवीणा' के माध्यम से अज्ञेय क्या कहना चाहते हैं? सोदाहरण बताएँ। 60

खण्ड ''ख''

5. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर आलोचनात्मक टिप्पणी लिखें। 20x2=60

(क) "मुझे अपने पर विश्वास नहीं था। मैं नहीं जानता था कि अभाव और भर्त्सना का जीवन व्यतीत करने के बाद प्रतिष्ठा और सम्मान के वातावरण में जाकर मैं कैसा अनुभव करूँगा। मन में कहीं यह आशंका थी कि यह वातावरण मुझे छल लेगा और मेरे जीवन की दिशा बदल देगा— और यह आशंका निराधार नहीं थी।''

(ख) ''मुझे यह कहने में हिचक नहीं कि मैं और चीजों की तरह कला को भी उपयोगिता की तुला पर तौलता हूँ। निस्सन्देह कला का उद्देश्य सौन्दर्य-वृत्ति की पुष्टि करना है और वह हमारे आध्यात्मिक आनन्द की कुंजी है, पर ऐसा कोई रुचिगत मानसिक तथा आध्यात्मिक आनन्द नहीं, जो अपनी उपयोगिता का पहलू न रखता हो। आनन्द स्वतः एक उपयोगिता-युक्त वस्तु है और उपयोगिता की दृष्टि से एक ही वस्तु से हमें सुख भी होता है, और दुःख भी।''

(ग) "मेरे लिये-राजनीति धर्मनीति से कम नहीं। इस राह पर मेरे साथ चलना है तो गीता का उपदेश गाँठ बाँध लो–निष्ठा से अपना कर्तव्य किये जाओ, बस। फल पर दृष्टि ही मत रखो।''

(घ) "जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की यह मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आई है उसे कविता कहते हैं। इस साधना को हम भावयोग कहते हैं और कर्मयोग और ज्ञानयोग का समकक्ष मानते हैं।"

6. ''गोदान हिन्दी उपन्यास यात्रा में एक महत्वपूर्ण मोड़ है।'' चर्चा करें। 60

7. स्कंदगुप्त 'इतिहास' नहीं, 'वर्तमान' की चिंता का नाटक है। स्पष्ट करें। 60

8. 'कविता क्या है' निबंध के आधार पर आचार्य शुक्ल की काव्यशास्त्रीय विचारधारा तथा निबंध कौशल की विशेषताएँ स्पष्ट करें। 60

इन्द्रजीत महाथा (111वाँ स्थान), I.A.S.-2008

दृष्टि The Vision

पुस्तिका सं. (Sheet No.) ....

उत्तर पुस्तिका (Answer Sheet)

187

नाम (Name) Indrajeet Mahatha विषय (Subject) Hindi तिथि (Date) 06/09/08

पता (Address) .... फोन नंबर (मोबाइल)........

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें (Please don't write anything in this space)

1 (क)

संदर्भ :

प्रस्तुत पंक्तियाँ हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध संत, भक्त व समाज सुधारक कवि कबीर के काव्य से ली गई है। कबीर भक्तिकाल के संत काव्य धारा के शिखर कवि थे जिन्हें हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'वाणी के डिक्टेटर' तथा 'भाषा के बादशाह' कहकर संबोधित किया है।

प्रसंग

प्रस्तुत काव्यांश के माध्यम से कवि ने कबीर ने गुरु की महिमा तथा उसके प्रभाव को अभिव्यक्त किया है।

व्याख्या

कबीर सतगुरु की महिमा का बखान करते हुए उसे असीमित बताते हैं। सतगुरु के द्वारा किए गए उपकार के कारण ही कबीर माया मोह से मुक्त होकर निराकार ईश्वर का साक्षात्कार करने में सफल होते हैं। उस निराकार ईश्वर की प्राप्ति का प्रभाव ऐसा है

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

कि उसे सामान्य इंद्रियों से अनुभव नहीं किया जा सकता है। कबीर की हालत ऐसी है मानो एक सतगुरु के उपदेश रूपी बाण ने उन्हें गूँगा, बहरा तथा लंगड़ा बना दिया हो। इस प्रकार सतगुरु का कबीर पर अत्यधिक उपकार है।

<u>भाव पक्ष</u> सौंदर्य

1. कबीर ने सतगुरु की प्रतिष्ठा को नाथ परम्परा से ग्रहण किया है।
2. वाङ्मय में गुरुप्रतिष्ठा भारतीय संस्कृति की उदात्त विरासत रही है जो कबीर के काव्य में प्रतिष्ठित हुआ है।
3. कबीर की ही बातों में कहें तो ईश्वर तथा गुरु दोनों के समक्ष उपस्थित होने पर गुरु ही पहले प्रणम्य है क्योंकि ईश्वर प्राप्ति का मार्ग वही बतलाता है।

<u>शिल्प पक्ष</u> सौंदर्य

1. भाषा साधुक्कड़ी तथा पंचमेल खिचड़ी। लोचन, अनँत, महिमा तत्सम शब्द हैं तो उघारिया पंजाबी शब्द है।
2. यहाँ प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग करते हुए गुरु के उपदेश को 'बाण' के माध्यम से तथा प्रभाव को भी प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त किया है।
3. शिल्प सहज है तथा भक्ति भावना ही केन्द्रीय है।

दृष्टि The Vision

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(5)

संदर्भ

प्रस्तुत काव्यांश नागार्जुन की प्रसिद्ध कविता 'अकाल और उसके बाद' से ली गई है। नागार्जुन आधुनिक काल के प्रगतिवादी चेतना के कवि हैं जो जन प्रतिबद्ध हैं तथा कबीर के पश्चात हिन्दी साहित्य के महान व्यंग्यकार के रूप में प्रसिद्ध हैं।

प्रसंग

प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से नागार्जुन ने अकाल के प्रभाव को मार्मिकता तथा संवेदना के साथ अभिव्यक्त किया है।

व्याख्या

नागार्जुन अकाल की भयावह परिणामों का उल्लेख करते हुए, कहते हैं कि इसने अपने प्रभाव में मानव जाति के साथ-साथ प्रकृति के अन्य उपादानों को भी ले लिया है। अन्न के अभाव में कई दिनों तक लोगों के घरों में चूल्हा एवं चक्की बंद रहे तथा जीवन की गति थम सी गई। यहाँ तक कि कानी कुतिया के वहाँ पड़े रहने तथा दीवारों पर छिपकलियों की गश्त के रूप में अकाल के प्रभाव को अनुभव किया जा सकता है। अन्न के अभाव में चूहे भी कई दिनों तक पराजित रहे, भूखे रहे।

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

भाव पक्ष

① नागार्जुन जनता की समस्याओं के प्रति प्रतिबद्ध कवि हैं। ये कवितावली में तुलसी द्वारा वर्णित अकाल की भयावहता को ही एक नया अर्थ विस्तार देते हैं।

② प्रस्तुत काव्यांश में मानव के जीवन का विस्तार प्रकृति के अन्य उपादानों से जोड़ा गया है तथा अकाल के माध्यम से इन्हें समवेत प्रस्तुत किया गया है।

③ प्रस्तुत पंक्तियाँ कहती हैं कि जीवन की केन्द्रीय समस्या 'अन्न' की प्राप्ति तथा 'भूख' का मिटना ही है। जो पेट भरने के पश्चात् ही विचारधाराओं का जन्म होता है

शिल्प पक्ष

① आधुनिक खड़ी बोली का अभिनव प्रयोग

② यहाँ 'चूल्हा' तथा 'चक्की' का मानवीकरण विशिष्ट है।

③ प्रतीकों के माध्यम से भूख के प्रभाव को व्यक्त किया गया है।

④ छोटे वाक्यों के साथ लयबद्ध पंक्तियाँ गंभीर संवेदनाओं को व्यक्त करने में सक्षम हैं।

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ

प्रस्तुत काव्यांश कवि बिहारीलाल द्वारा रचित 'बिहारी सतसई' से लिया गया है। ध्यातव्य है कि बिहारी लाल रीतिकाल के रीतिबद्ध परम्परा के शीर्षस्थ कवि हैं।

प्रसंग

प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से बिहारी राधा की भक्ति करते हैं तथा उनके सौंदर्य के प्रभाव को व्यक्त करते हैं।

व्याख्या

कवि बिहारी राधा की भक्ति करते हुए कहते हैं कि वह उसकी भवबाधा का निराकरण करें। यहाँ उन्होंने राधा को नगरवासिनी कहा है तथा उनके सौंदर्य के कृष्ण पर पड़ने वाले ~~कलात्मक~~ प्रभाव को कलात्मक अभिव्यक्ति देते हुए कहा है कि राधा के मन की छाया पड़ने से कृष्ण का रंग हरा हो जाता है। पुनः वे राधा की सुन्दरता के समक्ष उर्वशी के सौंदर्य को भी निम्नतर ही मानते हैं तथा कहते हैं वह हृदय में बसने वाली सौंदर्य मल्लिका होने के कारण कृष्ण के हृदय में बसी है।

दृष्टि The Vision

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

भाव पक्ष

① यहाँ बिहारी ने जयदेव, हाल, विद्यापति की परम्परा का निर्वहन करते हुए भक्ति तथा शृंगार का अद्भुत समन्वय किया है।

② प्रस्तुत पंक्तियाँ रंगों के ~~विज्ञान~~ के प्रति बिहारी लाल की बेहतर समझ को उद्घाटित करती है।

शिल्प पक्ष

① यहाँ बिहारी ने ब्रज भाषा का सुन्दर कलात्मक प्रयोग किया है।

② यहाँ बिहारी की 'समाहार क्षमता' शब्दों के माध्यम से अद्भुत बन पड़ी है।

③ बिहारी ने शब्दालंकार के रूप में 'डरबी' शब्द का सुन्दर प्रयोग किया है।

④ यहाँ कवि बिहारी लाल की 'गागर में सागर' समाहित करने की क्षमता भी दिखाई देती है।

—x—

दृष्टि The Vision

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-27604128, 0-9313888616, 0-9810316396 ई-मेल/E-mail : drishti_thevision@rediffmail.com

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

③

'राम की शक्ति पूजा' निराला के द्वारा 1936 ई. में रचित एक आख्यान परक कविता है। छायावाद के चार स्तंभों में से एक सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की यह रचना अपने 'मिथकीय या आख्यानपरक' संरचना के कारण कई तरह के संवेदनाओं को धारण करती है जो इसकी महानतम कृति के रूप में प्रतिष्ठित होने का सजीव प्रमाण है।

कतिपय में कुछ आलोचकों का मत है कि 'शक्ति पूजा' वास्तव में राम के संघर्ष को नहीं वरन् यह निराला के जीवन के यथार्थों को धारण करती है। अतः 'शक्ति पूजा' वस्तुतः निराला का ही आत्म प्रक्षेपण है। इस संदर्भ में उल्लेखनीय है कि इस रचना के तुरंत पूर्व निराला ने 1933 ई. में 'सरोज स्मृति' के रूप में अपने जीवन की व्यथा कथा को मार्मिक अभिव्यक्ति दी थी। इस संदर्भ में 1936 तक निराला पुनः शक्ति अर्जन कर जीवन की गतिशीलता को राम की शक्ति पूजा के माध्यम से व्यक्त करते हैं।

इस परिप्रेक्ष्य में 'सरोज स्मृति' तथा 'राम की शक्ति पूजा' के मध्य तुलना किए जाने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि क्या 'शक्ति पूजा' वास्तव

दृष्टि The Vision

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

में निराला की ही शक्ति पूजा है।

यह सच है कि निराला का जीवन वास्तव में संघर्षों से भरा था। यह संघर्ष उनके आर्थिक-जीवन में तो था ही, तात्कालीन प्रयोग विरुद्ध आलोचना के कारण उनकी रचनात्मक कृतियों को भी साहित्य जगत में उचित स्थान नहीं मिल पाया। अपने जीवन के आरंभिक दौर में उन्होंने पत्नी को खोया; पुनः कालान्तर में अपनी युवती पुत्री सरोज को भी बचाने में असफल रहे। 'सरोज स्मृति' की निम्नांकित पंक्तियाँ उनके वैयक्तिक जीवन के संघर्ष को व्यक्त करती है —

"दुख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ आज जो नहीं कही।"

यही भाव, 'राम की शक्ति पूजा' के मानव राम के मन में आता है जब वे कहते हैं —

"रावण-अधमरत भी अपना मैं हुआ अपर
यह नहीं रहा/शक्ति का खेल समर शंकर शंकर।"

वास्तव में 'राम' के प्रतीक के माध्यम से निराला अपने ही जीवन के संघर्ष को प्रक्षेपित कर रहे हैं। अपना आत्म प्रक्षेपण उस समय तीव्र व आलोकित हो जाता है जब निराला कहते हैं कि अपनी

दृष्टि The Vision

~~पुत्री के जीवन के समस्त कर्मों को वे~~ लिए

पुत्री के तर्पण हेतु अपने समस्त श्रेष्ठ कर्मों को वे नष्ट कर देना चाहते हैं। यही भाव राम में भी उस समय दृष्टिगोचर होता है जब सिद्धि के अंतिम समय में शक्ति पूजा का अंतिम पुष्प छिपा देती है —

> "धिक् जीवन जो पाता ही आया विरोध
> धिक् साधन जिसके लिए सदा किया शोध
> जानकी हाय! उद्धार प्रिया का हो न सका।"

प्रस्तुत पंक्तियों के द्वारा गार्हस्थिक प्रेम के प्रति निराला की प्रतिबद्धता को दिखाता है। अपनी पत्नी के प्रति निराला का प्रेम भी एकनिष्ठ है।

लेकिन निराला जिजीविषा के कवि हैं। जीवन के संघर्षों से वे विचलित अवश्य होते हैं लेकिन पराजित नहीं होते हैं, निराश नहीं होते हैं वरन् शक्ति की मौलिक कल्पना करते हैं तथा साहित्यिक क्षेत्र में अपनी अन्यतम कृति 'राम की शक्ति पूजा' के माध्यम से अपनी श्रेष्ठता में पुनः स्थापित करते हैं। यह भाव जीवन के प्रामाणिकता का परिचायक है जो संघर्षकर्त्ता को विजेता की तुलना में भी ऊँचाई देता है।

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें (Please don't write anything in this space)

वास्तव में राम का 'न थकने वाला मन' निराला का ही आंतरिक मन था जो निम्नांकित पंक्तियों में अभिव्यक्त हुआ है —

" वह एक और मन रहा राम का जो न थका — जो नहीं जानता दैन्य, नहीं जानता विनय।"

इस प्रकार 'राम की शक्ति पूजा' एक दृष्टिकोण से निराला की ही शक्तिपूजा प्रतीत होती है लेकिन इस संदर्भ में उल्लेखनीय है कि आख्यान परक होने के कारण 'राम की शक्ति पूजा' व्यापक अर्थ विस्तार की संभावनाओं को धारण करती है तथा एक साथ कई केन्द्रीय संवेदनाओं को गहन अंतर्गुम्फित कर देती है।

कुछ आलोचकों जैसे निर्मला जैन ने 'शक्ति की मौलिक कल्पना' को इसकी केन्द्रीय कथा माना है तो कुछ अन्य ने सीता मुक्ति के रूप में नारी मुक्ति, छंद मुक्ति तथा देश मुक्ति को भी इसकी संवेदना के रूप में स्पष्ट किया है। कुछ का मानना है कि इसे तत्कालीन राष्ट्रीय आंदोलन के संदर्भ में देखा जाना चाहिए। इस प्रकार राम की शक्ति पूजा अपने अर्थ संवेदनाओं को ग्रहण परिधि में लाती है। इसी परिप्रेक्ष्य में

दृष्टि The Vision

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
सम्पर्क —011-27654126, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishti_thevision@rediffmail.com

कहा जा सकता है कि 'शक्ति पूजा' एक अर्थ में 'निराला की शक्ति पूजा' अवश्य कही जा सकती है लेकिन यह एकमात्र संवेदना नहीं है। 'राम की शक्ति पूजा' एक महानतम कृति है जिसे विभिन्न संवेदनाओं के समवेत समागम रचना के रूप में ही आलोचित किया जाना चाहिए

—x—

योग. 37.

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)
दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)
दृष्टि The Vision
दृष्टि The Vision

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष :-011-27654128, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishti_thevision@rediffmail.com

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
Please don't write anything in this space

(6)

(क)

संदर्भ

प्रस्तुत गद्यांश नवलेखन के दौर के प्रसिद्ध नाटककार मोहन राकेश के नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' से लिया गया है। मोहन राकेश ने हिन्दी नाटकों तथा रंगमंच के मध्य एक जीवंत तादात्म्य स्थापित किया था।

प्रसंग

प्रस्तुत वाक्य कालिदास द्वारा कश्मीर की राजगद्दी त्यागने के पश्चात मल्लिका के समक्ष कहे जा रहे हैं।

व्याख्या

प्रस्तुत गद्यांश के माध्यम से कालिदास अपने मनोभावों को व्यक्त करता हुआ कहता है कि रचनाकार के रूप में उसका ग्रामीण जीवन उपेक्षित तथा अभावग्रस्त था तथा उसे यह बिल्कुल ज्ञात नहीं था कि उज्जैन के प्रतिष्ठा व सम्मानजनक वातावरण उसके जीवन को किस दिशा में ले जाएगी। लेकिन उसे अपने उपर विश्वास भी नहीं था तथा वह आशंकित भी था। आशंका इस बात को लेकर थी कि उज्जयिनी का वातावरण

दृष्टि The Vision

दृष्टि The Vision

उसके रचनाकार के व्यक्तित्व पर हावी हो जाएगा तथा उसकी सृजनात्मकता पर सत्ता हावी हो जाएगी। कालिदास की यह आशंका कालांतर में सही ही सिद्ध होती है।

भाव पक्ष :-

① प्रस्तुत पंक्तियों में व्यक्तित्व के विभाजन का वर्णन करने वाले अस्तित्ववादी दर्शन की पर्याप्त झलक मिलती है।

② यहाँ एक रचनाकार की सृजनशीलता तथा सत्ता के मध्य का द्वंद्व व्यक्त हुआ है। यह सार्वकालिक सत्य है कि सृजन प्रकृति के सानिध्य में ही सर्वोत्कृष्ट रूप में होता है।

③ कालिदास की यह समस्या आधुनिक मानव की समस्या है जो अप्रामाणिक जीवन जीने के लिए बाध्य है।

शिल्प पक्ष :-

① तत्सम निष्ठ खड़ी बोली का सुन्दर प्रयोग

② दीर्घ वाक्यों तथा योजक चिन्हों के सुन्दर प्रयोग के कारण प्रवाह जबर्दस्त बन पड़ा है।

③ यहाँ चरित्र स्वयं अपने कथन के माध्यम से अपने जीवन की अप्रामाणिकता को दर्शा रहा है।

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
फ़ोन : 011-27654128, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishti thevision@rediffmail.com

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें (Please don't write anything in this space)

संदर्भ

प्रस्तुत गद्यावतरण मन्नू भण्डारी द्वारा 1979 में रचित प्रसिद्ध राजनीतिक उपन्यास 'महाभोज' से लिया गया है।

प्रसंग

यह कथन मुख्यमंत्री दा साहब द्वारा अपने ही एक सेवक लखन को कहा गया है।

व्याख्या

यहाँ दा साहब अपनी कार्यसंस्कृति का बखान करते हुए कहते हैं कि उनके लिए राजनीति तथा धर्मनीति एक ही है। वे अपनी राजनीति में गीता के उपदेश के आधार पर ही कार्य करते हैं। वे फल की चिन्ता किए बिना निष्काम भाव से कर्म करते हैं। निष्ठापूर्वक कार्य स्वतः फलागम पर अवश्य परिणत होता है। यह कथन दा साहब लखन को तब समझाते हैं जब लखन के बदले जोरावर सिंह को टिकट (चुनाव हेतु) मिलने की संभावना प्रबल हो जाती है तथा लखन इस संदर्भ में बेचैन हो उठता है। लेकिन स्पष्ट है कि दा साहब का व्यवहार दोहरा है तथा अप्रामाणिक ही है जो उपन्यास के कथानक क्रम में कालान्तर में स्पष्ट होता है।

भाव पक्ष

① उपरोक्त वाक्य वस्तुतः राजनीति के आध्यात्मीकरण की अवधारणा पर बल देते हैं जिसे गाँधी ने अपनी कार्य पद्धति बनाई थी।

② वास्तव में यह अधिकार बोध तथा परिणाम की अपेक्षा कर्तव्य पालन पर बल देने वाला उद्धरण है। समूची गाँधीवादी राजनीति इसी भावना पर आधारित है।

③ उपरोक्त वाक्य समकालीन राजनेताओं के चरित्र के बाह्य पक्ष को उजागर करते हैं जब वे बहुत संयमित भाषा में अपनी बात रखते हैं लेकिन आंतरिक व्यवहार बिल्कुल विपरीत होता है।

त्रिल्प पक्ष:

① यहाँ छोटे वाक्यों तथा विराम चिन्हों के प्रयोग से खड़ी बोली का प्रवाह बेहतर बन पड़ा है।

② यहाँ सूत्र वाक्यों के माध्यम से कम शब्दों में गहरी बात कही गई है।

(12)

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(6)

संदर्भ

प्रस्तुत गद्यावतरण प्रसिद्ध निबंधकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल के निबंध 'कविता क्या है।' से लिया गया है—जिसमें निबंधकार ने अपने काव्यशास्त्रीय मान्यताओं को स्पष्ट किया है।

प्रसंग

शुक्ल जी 'कविता' को परिभाषित करने के क्रम में उपरोक्त बातें कहते हैं।

व्याख्या

शुक्लजी के अनुसार ज्ञान तथा रस की प्राप्ति की प्रक्रिया वस्तुतः समान है। जब आत्मा बाह्य बंधनों से मुक्त होकर अपने निजस्वरूप को जान लेती है तो व्यक्ति को ज्ञान की प्राप्ति होती है। ठीक उसी तरह जब हृदय अपने औपचारिक बंधनों से मुक्त होकर अपने को स्वच्छंद अभिव्यक्ति देता है तो रस की प्राप्ति होती है। इस रस की प्राप्ति के लिए मनुष्य अपने हृदय के भावों को शब्दों के रूप में अभिव्यक्ति देता है जिसे कविता कहा जाता है। इस प्रकार कविता जीवन के होने का प्रमाण है जिसको शुक्ल

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

ने भाव योग कहा है। कविता रचना विधान को उच्चतर प्रक्रिया मानते हुए उन्होंने इसे कर्मयोग तथा ज्ञान योग के समान माना है।

निरोध

① यहाँ शुक्ल जी ने अपनी सैद्धांतिक समीक्षा को स्पष्ट करते हुए कविता को परिभाषित किया है।

② कविता कर्म को ज्ञानयोग, भाव योग तथा कर्मयोग के रूप में स्वीकार करना श्रीमद्भगवद्गीता से प्रेरित प्रतीत होता है।

③ वास्तव में कविता भावों की स्वच्छंद अभिव्यक्ति ही है जिसे पंत ने यह कहते हुए व्यक्त किया है

" चुपचाप आँखों से निकलकर
बही होगी कविता अनजान।"

④ यहाँ शुक्ल जी ने वैज्ञानिक शैली में उपयुक्त शब्द विधान द्वारा कविता की परिभाषा दी है जो उनके 'विधेयवादी' दृष्टिकोण को व्यंजित करता है।

(13)

दृष्टि The Vision

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

(6)

'गोदान' 1936 ई. में प्रेमचंद द्वारा रचित एक महानतम औपन्यासिक रचना है। वस्तुतः हिन्दी आलोचना क्षेत्र में जो स्थान शुक्ल जी का है, नाटक के क्षेत्र में जो स्थान प्रसाद का है, हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में वही स्थान प्रेमचंद का है। 1918 से 1936 तक के अपने रचनाकाल के दौरान 'वरदान' से लेकर 'गोदान' तक के सफर में प्रेमचंद ने हिन्दी उपन्यास को उस परिपक्व अवस्था तक पहुँचाया जिसे तय करने में पाश्चात्य नाटकों को सौ से भी अधिक वर्ष लगे।

यद्यपि हिन्दी उपन्यास की औपचारिक शुरुआत 1880 के दशक में प्रकाशित 'परीक्षा गुरु' से मानी जाती है लेकिन 20वीं सदी के आरंभिक दो दशकों तक यह अपरिपक्व ही बना रहा तथा आधुनिक जीवन के संश्लिष्ट अभिव्यक्ति करने में असमर्थ ही बना रहा। लेकिन प्रेमचंद के आगमन के पश्चात् विषय वस्तु, दृष्टिकोण, चरित्र योजना, भाषा शैली देशकाल वातावरण की दृष्टि से प्रेमचंद ने हिन्दी उपन्यास को न केवल एक ही झटके में परिवर्तित कर दिया वरन् अपने समस्त रचना कर्म के दौरान

दृष्टि The Vision

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

उसे 'लगातार' परिपक्वता प्रदान करते गए जिसकी चरम परिणति महाकाव्यात्मक उपन्यास के 'गोदान' के रूप में होती है। इसी कारण गोदान सर्वाधिक संभावनाशील उपन्यास माना जाता है तथा इसकी प्रतिष्ठा हिन्दी उपन्यास के निर्णायक मोड़ के रूप में है।

गोदान एक गद्य विधा के रूप में अवश्य ही उपन्यास है किन्तु प्रभाव के स्तर पर यह महाकाव्य के औदात्य को धारण करता है। गोदान में न केवल देशकाल का अतिक्रमण करते हुए तात्कालीन सामाजिक आर्थिक व राजनीतिक समस्याओं का समग्र चित्रण है वरन् शिल्प के स्तर पर भी इसकी चरित्र योजना में पर्याप्त वैविध्य है, भाषा में सहज प्रवाह है, कथानक सुगठित है तथा इसका समग्र प्रभाव भी नैतिक रूप से उत्कर्षकारी है। इस प्रकार 'गोदान' न केवल उपन्यासों का प्रतिमान स्थापित करता है बल्कि यह साहित्यिक रचना कर्म के लिए भी एक मानदण्ड को तय करता है।

गोदान में देश काल के अतिक्रमण के कारण यह अपने युग के साथ साथ सार्वकालिक प्रासंगिकता को धारण करता है। गोदान में जिन

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखिए
(Please don't write anything in this space)

आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक समस्याओं तथा किसानों की ऋण समस्या, विधवा विवाह निषेध, बाल विवाह, मजदूरों की दयनीयता को वर्णित किया गया है वह 1936 के भारत के साथ-साथ कुछ हद तक वर्तमान भारत में भी लागू होता है। रामविलास शर्मा ने जिसे 'मुनाफे की दुनिया' तथा 'मेहनत की दुनिया' का अंतर कहा है वह अंतर आज भी शहरी भारत तथा ग्रामीण भारत के रूप में विद्यमान है।

जहाँ तक चरित्र योजना का प्रश्न है, प्रेमचंद ने उपन्यास को चरित्रों के माध्यम से परिभाषित किया। उन्होंने चरित्रों के संश्लिष्ट रूप दिया तथा गोदान में उसे स्वाभाविक रूप से विकसित होने दिया। प्रेमचंद की उपन्यास यात्रा आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद से आरंभ होती है तथा गोदान में पूर्णतः यथार्थवाद को धारण कर लेती है जब होरी की गाय की आशा के साथ ही अपनी जीवन लीला अभावग्रस्त जीवन के कारण समाप्त हो जाती है। यह एक ऐसा पड़ाव है जिसने यथार्थ को उपन्यासों के केन्द्र में स्थापित किया तथा यही यथार्थ कालांतर में मनोवैज्ञानिक, समाजवादी, सामाजिक, महिला लेखन दलित लेखन तथा आधुनिक भाव बोध के उपन्यासों

दृष्टि The Vision

दृष्टि The Vision
इस स्थान पर कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

में भिन्न-भिन्न रूपों में अभिव्यक्त होता रहा।

इस प्रकार हिन्दी उपन्यासों की अब तक की विकास यात्रा प्रेमचंद द्वारा स्थापित यथार्थ दृष्टिकोण, भाषा शैली, चरित्र योजना, विषयवस्तु पर ही आधारित रही है जिसे प्रेमचंद ने अपने उपन्यास 'गोदान' में चरम रूप प्रदान किया था।

जहाँ तक भाषा शैली का प्रश्न है तो प्रेमचंद ने भारत की समन्वयवादी संस्कृति के प्रतीक हिन्दुस्तानी शैली (सिरोहिन्द की परंपरा में) को ही अपनाया। उन्होंने भाषा को आतंक का नहीं तथा संप्रेषण का माध्यम बनाया। विभिन्न वर्गों से चरित्रों को उठाते हुए उनके अनुकूल भाषा को निर्मित किया है।

इसके साथ-साथ गोदान न केवल अपने युग की समस्याओं को चित्रित करता है वरन् पूँजीवाद, दलित, किसान व नारी चेतना तथा डेमोक्रेसी के माध्यम से आनेवाले समय को भी अभिव्यक्त करता है।

इसी कारण गोदान को हिन्दी उपन्यास की विकास यात्रा में निर्णायक मोड़ माना जाता है जिसने अपनी पूर्ववर्ती उपन्यास परंपरा को

दृष्टि
The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

एम.टी. इसके में परिपक्व रूप को प्रदान किया ही, साथ-ही-साथ आगामी औपन्यासिक धाराओं के विकास हेतु भी एक मजबूत पृष्ठभूमि तैयार कर दी।

— — —

→ X →

36

पता : 641, प्रथम तल, डॉ॰ मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष – 011-27604128, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishti thevision@rediffmail.com

(4)

'असाध्य वीणा' अज्ञेय द्वारा रचित एक प्रसिद्ध लंबी कविता है जिसकी रचना नई कविता के दौर में हुई। 'असाध्य वीणा' वास्तव में एक जापानी मिथक पर आधारित कविता है जिसमें राजा के दरबार में रखे वीणा को साधने का प्रयत्न दिखाया गया है जो दिव्य है तथा असाध्य है। इस कविता के माध्यम से अज्ञेय ने अपने काव्यशास्त्रीय मान्यताओं को प्रतिपादित करने का ~~प्रय~~ प्रयत्न किया है।

'असाध्यवीणा' कविता के माध्यम से अज्ञेय ने कई मूलभूत प्रश्नों पर विचार किया है, जैसे- किसी भी रचना कर्म का स्रोत क्या होता है, रचना प्रक्रिया का स्वरूप क्या होता है, रचना का प्रभाव व्यक्ति तथा समाज पर किस प्रकार पड़ता है। इन्हीं प्रश्नों को समाधेय बनाने का प्रयत्न अज्ञेय ने 'असाध्य वीणा' में ~~किया~~ किया है।

अज्ञेय के अनुसार कोई भी रचनाकार जब अपने अहंकार बोध को पूर्णतः त्याग कर रचनाकर्म को अपना सर्वस्व समर्पित कर देता है। व्यक्ति जब अहंकार तथा सामर्थ्य बोध के साथ

रचना कर्म में शामिल होता है तो रचना अपने वास्तविक रूप में सामने नहीं आ पाती है जैसा कि कविता में स्पष्ट किया गया है —

"मेरे हार गए सब जाने माने कलावंत
कोई ज्ञानी गुणी इसे साधा न सका।"

अज्ञेय के अनुसार जब व्यक्ति रचना प्रक्रिया में शामिल होता है तो वह समाज से कट जाता है तथा तल्लीन हो जाता है। इस प्रकार अज्ञेय के अनुसार रचना प्रक्रिया के दौरान व्यक्ति सामाजिकता से वैयक्तिकता की ओर गमन करता है लेकिन प्रभाव के स्तर पर यह पुनः सामाजिकता की ओर वापस लौटता है। अर्थात् व्यक्ति को समाज में स्वतंत्र होना है, समाज से स्वतंत्र नहीं होना है। इस प्रकार अज्ञेय ने व्यक्ति की समाज सापेक्ष स्वतंत्रता का समर्थन किया है। इसी संदर्भ में उल्लेखनीय है कि कितनी नावों में कितनी बार... असाध्यवीणा के माध्यम से अज्ञेय ने शब्द से शून्यता और पुनः शून्यता से शब्दों तक का सफर तय किए जाने की बात कही है।

दृष्टि The Vision
(Please don't write anything in this space)

अज्ञेय के अनुसार रचना अपने तात्विक रूप में स्वयं अभिव्यक्त होती है जो निम्न पंक्तियों के माध्यम से द्रष्टव्य है —

"तू अपने से गा
तू अपने को गा
तू उतर बीन के तारों में।"

अज्ञेय ने कला को ईश्वरीय रूप प्रदान करते हुए उसे पूर्ण व तात्विक माना है तथा उसे अखण्ड ब्रह्म का मौन, प्रश्नमय, अशेष कहकर संबोधित किया है।

"वह अखंड ब्रह्म का मौन
अशेष
प्रश्नमय।"

अज्ञेय ने कला अथवा रचनाकर्म के प्रभाव की भी व्याख्या प्रस्तुत कविता के माध्यम से की है। उल्लेखनीय है कि कला का प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति पर उसके वैयक्तिक दृष्टि के अनुरूप पड़ता है फलतः वे अपने-अपने स्वधर्म के पालन हेतु तत्पर हो जाते हैं। यह स्वधर्म 'गीता' से भी अनुप्राणित है। राजा, रानी, जनता प्रत्येक पर संगीत का अलग-अलग प्रभाव पड़ता है जिसे निम्न

दृष्टि The Vision

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें (Please don't write anything in this space)

दक्षि के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है —

" सबकी नियति अलग-अलग जानी
सब एकाकी पार तिरे। "

— अज्ञेय व्यक्तिवादी साहित्यकार हैं। वे समाज के परिवर्तन में व्यक्ति की भूमिका को केन्द्रीय मानते हैं। उनके अनुसार समाज को बदलने हेतु क्रांति की नहीं, वरन् अपने स्वधर्म के अनुसार कार्य करने की है। इस संदर्भ में वे कहते हैं—

" उठ गयी सभा
युग पलट गया
और सब अपने-अपने काम लगे। "

इस प्रकार अज्ञेय ने अपनी मान्यताओं को भी स्पष्ट करते हुए व्यक्ति को महत्व दिया है जो 'नदी के द्वीप' में अभिव्यक्त विचारों से साम्य रखता है —

" हम नदी के द्वीप हैं
लेकिन हम बहेंगे तो रहेंगे नहीं
क्योंकि बहना रेत होना है। "

दृष्टि The Vision

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष :-011-27604178, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishti_thevision@rediffmail.com

इस प्रकार असाध्यवीणा के माध्यम से अज्ञेय ने अपने काव्यशास्त्र की मान्यताओं का विस्तृत विवेचन किया है। व्यक्ति के महत्व, अनुभूति की प्रामाणिकता, क्षण को महत्व, इत्यादि के रूप में भी उन्होंने अपने विचारों को प्रस्तुत किया है। इस प्रकार यह कविता संवेदना तथा शिल्प दोनों स्तरों पर नए प्रतिमानों को स्थापित करती हुई व्यापक अर्थ ग्रहण क्षमता को धारण करती है।